

848. *ὄργας ξυνοίσω σοι*] Sensus est, iram tibi ignoscam ut aetate proveciori. Cf. Soph. El. 1465. *συμφέρειν τοῖς κρείσσοσι*. Arist. Lys. 166. *οὐδέποτε' εὐφρανθήσεται | ἀνήρ, ἐὰν μὴ τῇ γυναικὶ συμφέρειν*. Eur. Med. 870. *τὰς δ' ἐμὰς ὄργας φέρειν | εἰκός σ', ἐπεὶ etc.* 13. *πάντα συμφέρουσ' Ἰάσονι*. Herc. 1366. *ψυχὴν βιάζου τὰμὰ συμφέρειν κακὰ*. Alc. 371. *ἐγὼ σοι πένθος λυπρὸν συνοίσω τῆσδε*. Nos dicemus, I join in your indignation.

γεραιτέρα] A *γέρων*, ut *πεπαίτερος* (Ag. 1365.) a *πέπων*.

849. *τῷ μὲν*] In that respect. Schol. *διὰ τὸν χρόνον*.

σοφωτέρα] Cf. 431. *δίδαξον· τῶν σοφῶν γὰρ οὐ πένει (οὐν πέλεις?)*.

851. *ἐλθοῦσαι*] Si ieritis.

855. *πρὸς δόμοις Ἐρεχθέως*] 'Prope Erechthei aedem, quae in Acropoli sita erat.

856. *γυναικείων στόλων*] Cf. Pers. 123. *γυναικοπληθῆς ὄμιλος*.

858. *σὺ δ'* —] Ad eandem personam dictum. Cf. ad Ag. 1061.

859. *αἱματηρὰς θηγάνας — βλάβας*] Cf. Ag. 1535. *θήγει* (al. *δίκα*, *δίκα*) *δ' ἐπ' ἄλλο πρᾶγμα θηγάναν βλάβας | πρὸς ἄλλαις θηγάναισι Μοῖρα*.

σπλάγγων βλάβας] Cf. Ag. 1234. *ναυτίλων βλάβην*.

σπλάγγων] I. e. *praecordiorum*.

860. *ἐμμανεῖς*] Ad *θηγάνας* referendum epithetum quod proprie ad *νέων* pertinet.

θυμώμασι] A *θυμοῦσθαι*. Suspectum.

Schol. *ὄτι καὶ (οὐκ Dind.) οἰνωθέντες* —.

861. *ἐξελοῦσ'* mss. Schol. *ἀναπτειρώσασα*. Corrigendum videtur *ἐκζέουσ'* aut *ἐκζέσασ'*, transitivo sensu. Cf. Sept. 709. *ἐξέξεσεν γὰρ Οἰδίπου κατεύγματα*. Eur. Cycl. 392. *καὶ χάλκεον λέβητ' ἐπέξεσεν πυρί*. Concise dictum pro *ἐκζέουσα καρδίαν ἀστῶν ὡς καρδίαν ἀλεκτόρων*.

ἀλεκτόρων] Schol. *μάχιμον γὰρ τὸ ὄρνειον, τῶν τε ἄλλων ζώων τὸ συγγενὲς αἰδομένων μόνος οὐ φείδεται*. Pind. Ol. 12, 20. *ἐνδομάχας ἀλέκτωρ*. Varr. de R. R. III. 9. 'Sunt enim galli in certamine pertinaces — et ad praeliandum inter se maxime idonei.' Per hanc imaginem bella intestina civibus suis deprecatur dea.

862. *τοῖς ἐμοῖς ἀστοῖσιν*] Cf. 487. 1045.

Ἄρη ἐμφύλιον] Bellum civile. Cf. 356. *Ἄρης τιθασός*. Hom. 9, 163. *ἀφρήτωρ ἀθέμιστος ἀνέστιός ἐστιν ἐκεῖνος | ὅς πολέμου ἔραται ἐπιδημίου ὀκρυόεντος*.

864. *θυραῖος ἔστω πόλεμος* —] Externum sit bellum, idque non aegre veniens (ut gloria inde civibus meis feratur).

οὐ μόλις παρῶν] I. e. 'occurring without stint.' 'Quantumcunque sit nihil moror, dummodo non sit domesticum.' (Scholef.) "Cf. Prop. IV. 6. 9. 'Ite procul, fraudes; alio sint aere noxae.' Martial. VI. 25. 7. 'Bella velint Martemque ferum rationis egentem.' (Pal.) Cf. Ag. 1082. *ἀπώλεσας γὰρ (γὰρ μ'?) οὐ μόλις τὸ δεύτερον*. Eur. Hel. 334. *θέλουσαν οὐ μόλις καλεῖς*.

865. *ἐν ᾧ*] Ad *πόλεμος* vulgo refertur. Longe aliter Paleius, qui explicat, 'coming without stint [to his heart's content] to him who shall feel a strong desire for glory.' Recte proculdubio. Multo enim melius de homine quam